पद ८

(राग: यमन - ताल: त्रिताल)

नतमनहरणा तूं त्राहि मां जयकुमितसुहनन ।।ध्रु.।। द्विलोचन सुंदर पाणी। झळकित कुंडल कर्णी। स्वसुख कारण भवहर चरण ते गाति मुनि निशिदिनिं अघहरण। जयकुमितसुहनन ।।१।। जय सर्वस्तव्या अखिलेशा। जो अगम्या चतु:षष्ट अष्टादशा। कोपे नाकभूपादि कांपित तुज। देवत्रय स्तविती पंकजनयना।

जयकुमतिसुहनन ।।२।। गुरुराज माणिकप्रभुराजा। अव्यया अज निराकारा। पाररहित अपार पापहारी। तारी मनोहरा भवविदारा।।३।।